डॉ0 अवधेश नारायण सिंह
विभागाध्यक्ष, हिन्दी
एम0पी0कॉलेज मोहनिया, कैमूर
स्नातक भाग–2, हिन्दी ऑनर्स, पेपर–4

प्रश्न– चन्द्रगुप्त नाटक के आधार पर अलका का चरित्र चित्रण कीजिए।

उतर– अलका का प्रथम दर्शन नाटक के बीजस्थल स्वरुप प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में ही होता है। ऐतिहासिकता के दायरे में ही विवेचन एवं स्पष्टीकरण करना पड़ता है, पर नाटककार को यह छूट भी मिली होती है कि वह इन्हीं सीमाओं के अन्तर्गत ऐसे पात्रों की भी सृष्टि कर सके जो उसके सिद्धान्तों और आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हुए नाटक मे आ सके। यह स्वतंत्रता नाटककार के लिए आवश्यक भी है क्योंकि इसके बिना घटनाओं के तारतम्य में आकर्षण नहीं आ पाता। प्रसाद ने अलका की सृष्टि इसी ध्येय से की है। इसके चरित्र की ऐतिहासिक खोज करना तो व्यर्थ ही सिद्ध होगा, पर इस राष्ट्र प्रेमिका का अनुकरण सर्वथा भारतीय नारियों के जीवनोद्देश्य में नवीन जागृति ला सकता है।

प्रसाद जी ने चन्द्रगुप्त नाटक में अलका की सृष्टि में अपने सभी नाटकों के नारी–पात्रों के विशेष गुणों का संचयन करके की हैं। अलका का प्रथम परिचय हमें झंझावत के आदि उदगम तक्षशिला के गुरुकुल में नाटक के गुढ्य पात्रों के साथ होता है। सिंहरण और आम्भिक के परस्पर वाद–विवाद से उसे देश की स्थिति का ज्ञान होता हैं और उसकी देश प्रेमी आत्मा देश को भविष्य की आपतियों से बचाने के लिए कार्यशील दिखाई देती है। उसके चरित्र की सांस्कृतिक विशेषता यह है कि जब पिता और भाई देशद्रोही बन जाते हैं, तब भी वह अपने निर्मल चरित्र से देश–भक्ति का मार्ग अपनाती है। अपने भाई की आवाज में वह आवाज नहीं मिलाती। आगे चलकर तो वह प्रत्यक्ष रुप से अपने भाई का भी विरोध करती हुई घर–बार छोड़कर स्वतंत्र रुप से निकल पड़ती है। उसके पश्चात् वह गांधार की प्रथा में क्रान्ति को फैलाने का प्रयत्न करती है। क्रान्तिकारी के रुप में अलका का चरित्र कुछ ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह राख में छिपी हुई कोई चिनगारी ही थी जो परिस्थिति को अनुकूल पाकर आग लगाने की क्षमता रखती है। यद्यपि वह सिंहरण के जीवन से निर्भीकता, स्वातन्त्रप्रियता और वीर भावना का पाठ सीखाती है, पर आगे चलकर यही गुण स्वतः उसी की अपनी विशेषताएँ बन जाते हैं जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। देखिए न सिल्यूकस के तुम कहॉ, सुन्दरी राजकुमारी। इस प्रकार पूछने पर वह हृदय को गदगद करने वाला देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत उत्तर देती है– मेरा देश है, मेरे पहाड़ हैं, मेरी नदियॉ हैं और मेंरे जंगल हैं। इस भूमि के एक–एक परमाणु मेंरे हैं और मेंरे शरीर के एक–एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं से बने हैं, फिर मै कहॉ जाउॅगी यवन।

दण्डायन के आश्रम में वह स्पष्ट शब्दों में कहती है– यवनों के हाथ में स्वाधीनता बेंचकर उसके दान से जीने की शक्ति मुझमें नही । इसी देश–प्रेम के कारण वह नहीं बनना भी स्वीकार करती है और युद्ध भूमि में सिंहरण की सहायता करते हुए वह वंदिनी भी बनाई जाती है। अलका की कर्तव्य–तत्परता का ज्ञान उस समय होता है जबकि वह मालव दुर्ग की रक्षा का भार अपने कन्धों पर लेती है और कुशलता पूर्वक घायलों की सेवा व्यवस्था करती है तथा दुर्ग रक्षा में सिपाहियों की भॉति सन्नद्ध रहती है, तभी तो उसने अपने वाण–प्रहार से दो यवनों को धाराशायी कर दिया है। उसकी व्यवहार कुशलता सर्वत्र दर्शनीय है। यद्यपि वह अपने लक्ष्य को कहीं भी विस्मृत नहीं करती, फिर भी परिस्थितियों के अनुसार तत्क्षण निणय करके तदुनुकूल अपने को परिवर्तित कर लेती है। सिल्युकस के अनुचित व्यवहार की सम्भावना करके ही तो वह उससे– देखो सिंह आ रहा है, ऐसा कहती हुई चक्कर में डालती हुई स्वयं छिप जाती है। इसी प्रकार पर्वतेश्वर के प्रणय निवेदन पर तथा राजमहिषी पद का लालच दने पर असहाय होने के नाते एवं सिंहरण के स्वतंत्र कराने के लिए वह पर्वतेश्वर को अपने प्रेम का झूठा आश्वासन दे ही देती है, पर साथ ही मर्यादा निभाने के लिए वह पर्वतेश्वर से कुछ प्रतिज्ञा भी कराती है–वही तो उसका इष्ट है।

अलका के जीवन का दूसरा पक्ष भी अवलोकनीय है, वह है उसका नारी जीवन। सिंहरण के प्रति व्यक्त हुए उसके ये विचार प्रारम्भिक नारीगत आकर्षण के ही द्योतक है। वह अपने भाई आम्भिक से सिंहरण के आकृष्ट हुई कहती है–भाई इस वन्य निर्झर के समान स्वच्छ और स्वच्छन्द हृदय में कितना वेग है। यह अवज्ञा भी सराहनीय है, जाने दो। नारीगत यह आकर्षण ही सहज वृति प्रत्येक सामान्य युवती के हृदय में उठा सकती है, पर अलका का यह आकर्षण जो सिहरण की सुन्दरता, निर्भीकता, योग्यता आदि पर है। यदि वासना की पूर्ति के लिए ही होता, तो वह वास्तव में सामान्य नारी ही होती, पर सिंहरण के इन गुणों ने उसके हृदय में सुषुप्त भावों को जगाने और क्रान्ति मचाने का कार्य किया है। उसने सिंहरण के व्यक्तित्व में कुछ देखा है। उसी के शब्दों में देखिए– जिस देश में ऐसे वीर युवक हों, उसका पतन असम्भव है। मालववीर ! तुम्हारे मनोबल में स्वतंत्रता में, तुम्हारी दृढ़ भुजाओं में आर्यावर्त के रक्षण की शक्ति है।

जन–जीवन को अपनी ओर आकर्षित करने का गुण अलका में विशेष मात्राा में है। उसके गति राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत है। अलका जब हाथ में आर्यपताका लेकर चलती है और मुख से हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती प्रयाणगीत गाती है, तब उसका नेत्रीरुप ऑखों के सम्मुख साकार हो उठता है। उसकी जनता के प्रति कही गई इस वाणी में कितना उत्साह और वीरोल्लास है– वीर नागरिकों ! देश षद्दलित हो रहा है और तुम विलासिता में फॅस रहे हो। क्या यही मातृभूमि के प्रति तुम्हारा कर्तव्य है ? जिस देश मे ऐसी नारियॉ होंगी, उसकी स्वतंत्रता अरमता के रुप में सदैव विद्यमान रहेगी। उसकी इसी निःस्वार्थ देशभक्ति और पवित्र भावना से ही तो अन्त मे आम्भिक उससे क्षमा–याचना करता है और कहता है– बहन तु छोटी है, पर मेंरी श्रद्धा का आधार है। तक्षशिला के लिए अलका पर्याप्त है। आम्भिक की आवश्यकता न थी। तुने तो गांधार राजवंश का मुख उज्जवल कर दिया है।